By:- Sunita Kumari
Dept. of History
J.N.C. Madhubani

B.A. History
Deg. III
Paper-VIII

साम्प्रदायिकता के कारण
(Causes of Communalism)

1. परम्परागत शत्रुता:- हिन्दू और मुस्लिम शत्रुता के इतिहास अत्यंत पुराना है। जब मुस्लिम भारत में आक्रमणकारी के रूप में आये, तब से भारत भूमि पर साम्प्रदायिकता की भावना का विकास हुआ। उन्होंने अपने धर्म का प्रसार एवं विस्तार करने के लिए मंदिरों को तोड़ा, भारतीय संस्कृति को नष्ट किया, हिन्दुओं को जबरन मुसलमान बनाया तथा उनकी स्त्रियों से विवाह किया। यद्यपि हुमायूँ, अकबर, जहाँगीर एवं शाहजहाँ ने हिन्दू-मुस्लिम एकता को बढ़ाने के लिए अनेक प्रयत्न किये, लेकिन फिर भी हिन्दुओं के मन में मुसलमानों के प्रति घृणा की भावना कम नहीं हो सकी।

2. साम्प्रदायिक संगठन:- भारत में अंग्रेजी शासनकाल में मुस्लिम लीग और हिन्दू महासभा आदि साम्प्रदायिक संगठनों ने मुसलमानों और सिक्खों के ऐसे संगठनों की संख्या में निरंतर वृद्धि हो रही है जो धर्म की दुहाई देकर भारत में साम्प्रदायिकता की भावना को विकसित करते हैं। यह साम्प्रदायिक भावना हीं के समय हिंसा में परिवर्तित हो जाती है। समय-समय पर हिन्दू-मुसलमानों साम्प्रदायिक दंगे तथा श्रीमती इन्दिरा गाँधी की हत्या के बाद हुए दंगे इसके उदाहरण हैं।

3. सामाजिक-सांस्कृतिक भिन्नता:- हिन्दुओं-मुसलमानों ईसाईयों और सिक्खों की प्रथाएँ, परम्परायें, मान्यतायें, वेश-भूषा, धार्मिक पूजा पद्धति, त्योहारों आदि में विभिन्नता पायी जाती है। हिन्दू मुसलमानों के खान-पान, रहन-सहन, विवाह, मिलन पूजा पद्धति तथा सामाजिक विधानों में पर्याप्त भिन्नता एवं विरोधाभास है। यह सामाजिक सांस्कृतिक भिन्नता विभिन्न धर्म

के अनुयायियों के बीच साम्प्रदायिकता की भावना में वृद्धि करती है।

4. राजनीतिक स्वार्थ :- अपने राजनीतिक स्वार्थों की पूर्ति के लिए जिन्ना ने मुसलमानों को भड़काया और उसके पश्चात इस देश का विभाजन हुआ। लोकसभा विधानसभा अथवा अन्य चुनावों के समय प्रत्याशियों चयन करने में उस क्षेत्र में विभिन्न धार्मिक समूहों की धार्मिक भावनाओं पर अधिक ध्यान दिया जाता है। विभिन्न राजनीतिक दल सत्ता प्राप्त करने के लिए साम्प्रदायिक संघर्ष करवाते है।

5. धार्मिक असहिष्णुता :- विभिन्न धर्मों से संबंधित प्रचारक एवं नेता इस प्रकार से प्रचार करते है कि उनका धर्म सर्वोच्च है तथा दूसरे धर्मों के प्रति घृणा का भाव भर देते है। इससे साम्प्रदायिक संघर्ष करते है। महंत, मठाधीश मुल्ला, मौलवी, पादरी आदि अपने धर्म के अनुयायियों के धार्मिक कट्टरता का पाठ पढ़ाते है। यह धार्मिक कट्टरता साम्प्रदायिक संघर्षों को जन्म देती है।

6 कानून की असमानता :- भारत में हिन्दुओं मुसलमानों और इसाईयों के सामाजिक कानूनों में विभिन्नता है। मुसलमानों को विवाह और तलाक के संबंध में इस्लामी कानून के अनुसार एक विवाह का अधिकार है तथा विवाह विच्छेद के कानून अत्यंत कठोर है।